भारत सरकार

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 1380

दिनांक 03 दिसम्बर, 2024

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा सुपारी का वर्गीकरण

1380. श्री राजमोहन उन्नीथन :

क्या **कृषि और किसान कल्याण मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सही है कि सुपारी एक आवश्यक बागवानी फसल है जो संपूर्ण देश में धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या सरकार कई शोध और समीक्षा पत्रों के आधार पर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा सुपारी को कैंसर जनक के रूप में वर्गीकृत करने के पश्चात् सुपारी किसानों के समक्ष आने वाली चुनौतियों से अवगत है, हालांकि, ऐसे पत्रों की गंभीरता से जांच करने पर, यह पाया गया है कि अधिकांश पत्रों में चबाने वाले मिश्रण जैसे कि पान, गुटखा, आदि संबंधी डेटा एकत्र किया गया था, जिससे त्रुटिपूर्ण निष्कर्ष निकले, यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है और इस संबंध में सरकार द्वारा क्या कार्रवाई की गई है;

(ग) क्या सरकार को यह भी पता है कि उपरोक्त वर्गीकरण के विपरीत कई शोध पत्र हैं जो बताते हैं कि सुपारी कैंसर जनक नहीं बल्कि कैंसर रोधी है, यदि हां, तो इन निष्कर्षों पर सरकार की क्या प्रतिक्रिया है;

(घ) क्या सरकार इस वर्गीकरण की समीक्षा की वकालत करते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और इंटरनेशनल एजेंसी फॉर रिसर्च ऑन कैंसर (आईएआरसी) में इस मामले में हस्तक्षेप करेगी; और

(ङ) यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

<u>उत्तर</u>

कृषि और किसान कल्याण राज्य मंत्री

(श्री भागीरथ चौधरी)

(क) : जी, हां। सुपारी का इस्तेमाल पान के साथ अथवा सादी या सुगंधयुक्त सुपारी के रूप में चबाने की सामग्री के रूप में होता है। पारंपरिक रूप से इसका इस्तेमाल ''ताम्बूल'' के रूप में भोजन के पश्चात किया जाता है। भारत में इसका उपयोग सभी धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में किया जाता है। सुपारी में कई एल्कलाइड होने के कारण इसका इस्तेमाल आयुर्वेद और पशुचिकित्सा संबंधी औषधियों में किया जाता है।

(ख) एवं (ग) : जी, हां। सरकार सुपारी उगाने वाले किसानों के समक्ष आने वाली चुनौतियों से अवगत है। यह देखा गया है कि सुपारी से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव के कुछ अनुसंधान पत्रों की, जिन्हें विश्व स्वास्थ्य संगठन उद्धरित करता है, कार्य-प्रणाली संबंधी सीमाएं हैं। इनसे अनिश्चियात्मक रिपोर्टें मिलती हैं। उल्लेखनीय है कि इनमें से अधिकांश अध्ययन चबाने वाले मिश्रणों, जैसे कि पान और गुटका से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों पर केंद्रित थे, जिसमें अन्य सामग्रियों के साथ सुपारी मिली होती है। इन अध्ययनों ने मानव स्वास्थ्य पर अलग से सुपारी के सेवन के एकमात्र और विशिष्ट प्रभावों का संकेत नहीं दिया है।

नवम्बर, 2023 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड में बहु-संस्थागत हितधारकों द्वारा उपलब्ध साहित्य की एक व्यवस्थित समीक्षा की गई। इस समीक्षा से पता चला कि इन प्रयोगों में इस्तेमाल की गई एरेकोलाइन (सुपारी में मौजूद एल्कलाइड) की खुराक सामान्य रूप से चबाने के दौरान निकलने वाली मात्रा की तुलना में अधिक सांद्रता वाली थी। कुछ अध्ययनों से यह भी पता चला है कि कम मात्रा में एरेकोलाइन, ट्यूमर के विकास को रोकता है।

(घ) और (ङ) : सुपारी के स्वास्थ्य प्रभावों पर ज्ञान की कमी को दूर करने और निर्णायक साक्ष्य प्रदान करने के लिए कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय ने "सुपारी और मानव स्वास्थ्य पर साक्ष्य-आधारित अनुसंधान" शीर्षक से एक अध्ययन करने की योजना बनाई है। यह अध्ययन मानव स्वास्थ्य पर सुपारी के प्रभाव का विस्तृत अनुसंधान करने के लिए अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर)- कोशिकीय एवं आणविक जीव विज्ञान केंद्र (सीसीएमबी), भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी) और अन्य सहित चिकित्सा अनुसंधान से जुड़ी लगभग 16 राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय एजेंसियों को एक साथ लाता है।

****